भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और स्वदेशी बहिष्कार आन्दोलन

डॉ. सत्येन्द्र नारायण प्रसाद

जहाँ स्वदेशी आन्दोलन को सभी का, कुछ सरकारी अधिकारियों तक का समर्थन मिला, वहीं बहिष्कार को आशंका की दृष्टि से देखा गया। 1905 ई० के कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष ने सावधानी बरतने के लिए कहते हुए बहिष्कार को 'औरों को चोट पहुँचाने के लिए बदले की कार्रवाई' कहा। मदन मोहन मालवीय और कुछ अन्य नरम विचारों वाले नेताओं ने लाजपतराय तथा कुछ बंगाली नेताओं के उस प्रस्ताव का विरोध किया, जिसमें कांग्रेस को बहिष्कार से प्रतिबद्ध किया गया था। इसके दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम हुए, क्योंकि नरम और गरम विचारों वाले नेताओं में मतभेद बढ़ते गए और 1907 ई० में वे एक दूसरे से अलग हो गए।

आगामी वर्षों में स्वदेशी बहिष्कार आन्दोलन उतार–चढ़ाव के साथ चलता रहा। 1906 ई० में यह चरम सीमा में था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने, जिसका अधिवेशन दिसम्बर 1906 ई० में कलकत्ता में हुआ, उसे जनता की भावना की अभिव्यक्ति स्वीकार किया।